अध्याय - ३

विद्यार्थियोंके उच्चारण दोष और उनके कारणोंका अभ्यास

३.१ प्रास्ताविक

३.२ प्रश्नावली देनेवाले अध्यापकों की सर्वसाधारण जानकारी

३.३ प्रश्नावली देनेवाले अध्यापकों की शैक्षणिक पात्रता

३.४ बी.एड्. प्रशिक्षण के लिए होनेवाली अध्यापन पध्दति

३.५ हिन्दीकी अन्य परीक्षा उत्तीर्ण होनेवाले अध्यापकोंकी जानकारी

३.६ अध्यापकोंके अध्यापन-अनुभवकी जानकारी

३.७ हिन्दी उच्चारण-दोषोंका वर्गीकरण

३.८ उच्चारण दोषोंके कारण

३.९ उच्चारण दोषोंपर उपाययोजना

३.१० वाचनद्वारा पाये जानेवाले दोष

३.११ समारोप.

३.१ प्रास्ताविक :

प्रकरण एक और दो में प्रस्तुत संशोधनके लिए अनुकूल ऐसी जानकारी प्राप्त की है। उदा. हिन्दी भाषा का महत्व, द्वितीय भाषाके रूपमें हिन्दीका महत्व, हिन्दी अध्यापक - उसके सामान्य और विशेष गुण आदिके बारेमें चर्चा कर, प्रस्तुत संशोधन के लिए उपयुक्त ऐसी सैध्दांतिक पार्श्वभूमि निर्माण की है।

इस पार्श्वभूमि पर आधारित प्रस्तुत प्रकरणमें, हिन्दी शब्द उच्चारणोंकी कारण मीमांसा की है। इन कारणोंको जानने के लिए हिन्दी अध्यापकों को एक प्रश्नावली दी गई थी। इस प्रश्नावली की अधिक जानकारी प्रकरण ` एक ` मे दी गई है। कोल्हापूर शहरमें कुल ४५ (पैंतालिस) माध्यमिक स्कूल हैं, उनमेंसे पचीस स्कूलके तीस हिन्दी अध्यापकोंने प्रश्नावली पूरी जानकारी के साथ भर दी है। (देखिए-परिशिष्ट ` अ `) इनमेंसे चार-पाँच अध्यापकोंने प्रस्तुत संशोधकके सामनेही प्रश्नावली भर दी।

तीस अध्यापकोंने प्रश्नावली द्वारा जो जानकारी दी है, उसका विश्लेषण प्रस्तुत प्रकरणमें किया है।

प्रश्नावली के अतिरिक्त उच्चारण-दोष ढूँढनेके लिए ` बी ` ग्रेड स्कूलके (साई हायस्कूल, कोल्हापूर) पाँचवी से सातवी तक के हर कक्षाके पाँच विद्यार्थियोंका वाचन ध्वनिमुद्रित किया।

प्रश्नावली द्वारा जानकारी प्राप्त कर लेनेके बाद हिन्दी अध्यापकोंके अध्यापन-अनुभवानुसार पाँच अध्यापकोंका इण्टरव्हयू लेकर विद्यार्थियोंके उच्चारण दोषोंके बारेमें चर्चा की, और इस आधारपर भी उच्चारण-दोष ढूँढनेका प्रयास किया गया।

३.२ प्रश्नावली देनेवाले अध्यापकोंकी
सर्वसाधारण जानकारी :-

प्रस्तुत संशोधन समस्या हिन्दी भाषाकी होने के कारण हिन्दी अध्यापकोंकोही प्रश्नावली देना अनिवार्य था । प्रश्नावलीके शुरुआतमें ही हिन्दी अध्यापकका और स्कूलका नाम पूछा गया था । प्रश्नावली को प्रतिसाद देनेवाले अध्यापक तथा उनके स्कूलकी सूची परिशिष्ट ` ब ` में दी गई है ।

३.३ प्रश्नावली देनेवाले अध्यापकोंकी
शैक्षणिक पात्रता :-

किसीभी माध्यमिक स्कूलमें पाँचवी से सातवी कक्षा तक पढानेके लिए अध्यापककी शैक्षणिक पात्रता कमसे कम एस.एस.सी.,डी.एड्. है । किंतु संशोधकके मतानुसार एस.एस.सी., डी.एड्. यह शैक्षणिक पात्रता पर्याप्त नहीं है, क्योंकि पाँचवी से सातवी कक्षातक हिन्दी पढानेके लिए हिन्दीका अभ्यास जितना आवश्यक है, (कमसे कम बी.ए.) उतना एस.एस.सी, डी.एड्. अध्यापकोंका न होनेके कारण पाँचवीसे सातवी कक्षातक हिन्दी पढानेमें वे अयोग्य होते है । उसी प्रकार हिन्दी शिक्षाकी नींव पाँचवी कक्षासे डाली जानेके कारण विद्यार्थियोंके हिन्दी उच्चारण और लेखनकी ओर आरंभमेंही अगर ध्यान दें, तो आगे चलकर होनेवाली गलतियोंको हम रोक सकते हैं । इस दृष्टिसेभी एस.एस.सी., डी.एड्. अध्यापकका हिन्दीका पर्याप्त ज्ञान जितना आवश्यक है, उतना असंभव है ।

हिन्दी पढानेके लिए हिन्दी अध्यापककी शैक्षणिक पात्रता देखना, प्रस्तुत शोधनिबंधके संदर्भमें अत्यावश्यक है । इस दृष्टिसे आगे सारणी क्रमांक ३.१ और ३.२ देखेंगे कि पात्र और अपात्र शिक्षण संस्था कितनी है ।

सारणी क्र. ३.१

प्रश्नावलीका प्रतिसाद देनेवाले अध्यापकोंकी शैक्षणिक पात्रता

अ.क्र.	शैक्षणिक पात्रता	शिक्षक संख्या
१)	एस.एस.सी., डी.एड्.	३
२)	बी.ए.	९
३)	बी.ए., डी.एड्.	१
४)	बी.ए., बी.एड्.	१२
५)	एम.ए.	१
६)	एम.ए., डी.एड्.	१
७)	एम.ए., बी.एड्.	११
८)	एम.ए., एम.एड्.	१
	कुल शिक्षक संख्या	३०

सारणी क्र. ३.२

पदवी-पदव्युत्तर परीक्षाके लिए होनेवाले
विषयानुसार शिक्षकको की संख्या

अ.क्र.	पदवी-पदव्युत्तर परीक्षाका विषय	शिक्षक संख्या
१)	हिन्दी	१३
२)	मराठी	२
३)	अंग्रेजी	१
४)	हिन्दी-मराठी	५
५)	इतिहास	२
६)	मूगोल	१
७)	समाजशास्त्र	१
८)	मानसशास्त्र	१
९)	समाजशास्त्र-अर्थशास्त्र	१
	एस.एस.सी, डी.एड्.	३
	कुल शिक्षण संख्या	३०

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

उपर्युक्त सारणीमे हिन्दी अध्यापकोंके पदवी-पदव्युत्तर परीक्षाको होनेवाले विषय इस प्रकार हैं - हिन्दी १३, मराठी-हिन्दी ५, मराठी और इतिहास २-२, इसी तरह अंग्रेजी, भूगोल, समाजशास्त्र, मानसशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र प्रत्येकी १ है ।

प्रकरण ` दो ` में हिन्दी शिक्षकके विशेष गुणोंकी चर्चा की है । इसमें पदवी-पदव्युत्तर परीक्षाके लिए केवल हिन्दीही विषय आवश्यक माना है । क्योंकि हिन्दी यह द्वितीय भाषा होनेके नाते हिन्दीका पर्याप्त अभ्यास (उच्चारण-लेखनकी दृष्टिसे) हर हिन्दी अध्यापकका होना जरूरी है । लेकिन यहाँ पचीस माध्यमिक स्कूलमें नऊ अध्यापक ऐसे हैं, जिनका पदवी-पदव्युत्तरके लिए हिन्दी विषय न होनेपरभी हिन्दी विषय पढाते हैं ।

उपर्युक्त विवेचनसे हम यह कह सकते हैं कि हिन्दीका स्तर घटानेके लिए इन शिक्षकोंकी संख्या कुछ अंशतक क्यों न हो, जरूर जिम्मेदार है ।

इसपर यह सुझाया जा सकता है कि, माध्यमिक स्कूलमें हिन्दी शिक्षकोंकी नियुक्ति करते समय उनका पदवी परीक्षाके लिए हिन्दी ही प्रमुख विषय होना आवश्यक है ।

३.४ बी.एड्. प्रशिक्षणके लिए होनेवाली अध्यापन पध्दति :

पदवी-पदव्युत्तर परीक्षाके लिए होनेवाले विषयोंका विश्लेषण करनेके बाद बी.एड्. प्रशिक्षणके लिए किसी दो अध्यापन पध्दतियोंको चुनना पडता है । उनमेंसे एक अध्यापन पध्दति वह चाहिए, जो पदवी परीक्षाका मुख्य विषय हो, और दूसरी वह चाहिए की जो गौण विषय हो, अथवा जिसका विषयज्ञान अधिक हो । हिन्दी अध्यापकोंकी बी.एड्. प्रशिक्षण कालमें होनेवाली अध्यापन पध्दति देखना, प्रस्तुत संशोधनके संदर्भमें आवश्यक है । हिन्दी अध्यापकके लिए

हिन्दी अध्यापन पध्दति होना जरूरी है। क्योंकि हिन्दी अध्यापन पध्दतिद्वारा ही हिन्दी अध्यापक, हिन्दी शिक्षाके उद्देश्य, हिन्दी अध्यापन पध्दतियाँ आदिके बारेमें जानकारी मिलती है। अत: हिन्दी अध्यापकोंने बी.एड्.प्रशिक्षणके लिए कौनसी अध्यापन पध्दति चुनी थी, यह आगे सारणी क्रमांक ३.३ में देखेंगे।

सारणी क्रमांक ३.३

हिन्दी अध्यापकोंने बी.एड्. प्रशिक्षणके लिए चुनी हुयी अध्यापन पध्दति

अ.क्र.	अध्यापन पध्दति	शिक्षक संख्या
१)	हिन्दी-मराठी	८
२)	हिन्दी-अंग्रेजी	४
३)	हिन्दी-इतिहास	७
४)	हिन्दी-भूगोल	२
५)	अंग्रेजी-भूगोल	१
६)	अंग्रेजी-उर्दू	१
७)	मराठी-इतिहास	१
८)	एस.एस.सी., डी.एड्.	३
९)	एम.ए.	१
१०)	एम.ए., डी.एड्.	१
११)	बी.ए., डी.एड्.	१
		३०

इस (उपर्युक्त) सारणीद्वारा यह पता चलता है कि, मराठी-हिन्दी अध्यापन-पध्दति लेनेवाले अध्यापकोंकी संख्या आठ है। उसी प्रकार हिन्दी-इतिहास ७, हिन्दी-अंग्रेजी ४, मराठी-इतिहास २, हिन्दी-भूगोल १, अंग्रेजी-भूगोल १ और अंग्रेजी-उर्दू १ इस प्रकार है।

इस विवेचनद्वारा हमें यह दिखाई देता है कि, तीस हिन्दी अध्यापकोंमें बी.एड्. प्रशिक्षणके लिए हिन्दी अध्यापन पध्दति चुननेवाले शिक्षकोंकी संख्या ७० प्रतिशत है। वास्तविक यह संख्या १०० प्रतिशत होना आवश्यक है।

इस विश्लेषणसे यह स्पष्ट होता है कि, हिन्दी अध्यापन पध्दति न लेते हुए भी ३० प्रतिशत शिक्षक हिन्दीका अध्यापन करते हैं। जिन्हें हिन्दी अध्यायन पध्दतियाँ, हिन्दी अध्यापनके उद्देश्य, हिन्दीका अध्यापक - उसके विशेष गुण आदिकी जानकारी नहीं। ऐसे स्थितिमें उनका हिन्दी अध्यापन सफल होना कठिन है।

इसपर यह सुझाया जा सकता है कि, जिन अध्यापकोंने बी.एड्. प्रशिक्षाके लिए हिन्दी अध्यापन पध्दति चुनी है, केवल उन अध्यापकोंकी नियुक्ति हिन्दी पढाने के लिए की जाए।

३.५ हिन्दीकी अन्य परीक्षा उत्तीर्ण होनेवाले अध्यापकोंकी जानकारी :

प्रकरण दो में हिन्दी अध्यापक उसके सामान्य और विशेष गुणोंकी चर्चा की है। विशेष गुणोंमें हर हिन्दी अध्यापकका हिन्दी विषयका गहरा अभ्यास होना आवश्यक है, ऐसा कहा गया है। क्योंकि भाषा यह ज्ञानप्राप्तिका सशक्त माध्यम है। वाचनसेही भाषा समृध्द बनती है। इस दृष्टिसे हिन्दी अध्यापकने पदवी-पदव्युत्तर परीक्षाके अतिरिक्त हिन्दी विषयक कोई अन्य परीक्षा दी है, अथवा नहीं, यह देखना प्रस्तुत संशोधनके संदर्भमें आवश्यक है। इस सन्दर्भमें प्रश्नावलीमें एक प्रश्न पूछा गया था। हिन्दी अध्यापकोंने इस प्रश्नके बारेमें जो प्रतिसाद दिया है, वह निम्न सारणी क्रमांक ३.४ में दिखाई देता है।

सारणी क्रमांक ३.४

हिन्दी परीक्षा उत्तीर्ण होनेवाले अध्यापकोंकी संख्या

अ.क्र.	हिन्दी परीक्षा	शिक्षक संख्या
१)	हिन्दी दुसरी राष्ट्रभाषा	१
२)	कोविद	१
३)	शिक्षक-सनद	८
४)	हिन्दी-प्रवीण	२
५)	पंडित	१
६)	शिक्षक, सनद, पंडित कोविद	१
७)	साहित्य सुधाकर	१
८)	हिन्दी साहित्यरत्न	१

उपर्युक्त विश्लेषणद्वारा यह दिखाई देता है कि, हिन्दी का अध्यापन करनेवाले अध्यापकोंमेंसे केवल ५३.३ प्रतिशत शिक्षकोंने हिन्दी परीक्षा दी है। परंतु अन्य अध्यापक इस परीक्षाके प्रति उदासिन दिखाई देते हैं। वास्तविक हर हिन्दी अध्यापक को इसकी आवश्यकता है, जिससे उनके हिन्दी ज्ञानमें थोडीसी क्यों न हो, वृध्दि होनेके लिए मदद होगी।

इसपर यह सुझाया जा सकता है कि, हिन्दी परीक्षा उत्तीर्ण होनेवाले अध्यापकोंको नियुक्तिके समय प्राधान्य दिया जाए। अगर ऐसे अध्यापक मिलना असंभव है, तो नियुक्ति के बाद क्यों न हो, उन्हें हिन्दी परीक्षा देनेके लिए मुख्याध्यापकद्वारा प्रोत्साहन मिलना आवश्यक है।

ऐसे अध्यापकोंको परीक्षाकी श्रेणीनुसार अतिरिक्त इन्क्रीमेंट सरकारद्वारा मिलना आवश्यक है ।

३.६ अध्यापकोंके अध्यापन अनुभव की जानकारी :

माध्यमिक स्कूलके हिन्दी अध्यापकोंके अध्यापन अनुभवके बारेमें प्रश्नावलीमे प्रश्न पूछा था । इस संदर्भमें हिन्दी अध्यापकोंने जो जानकारी दी है, वह आगे सारणी क्रमांक ३.५ में दी गई है ।

सारणी क्रमांक ३.५

अध्यापकोंका अध्यापन अनुभव

वर्ष (वर्गान्तर)	अध्यापक संख्या
३० - ३२	२
२७ - २९	-
२४ - २६	२
२१ - २३	२
१८ - २०	३
१५ - १७	७
१२ - १४	३
९ - ११	२
६ - ८	५
३ - ५	४

उपर्युक्त सारणीद्वारा यह दिखाई देता है कि, ४ से ५ वर्षका अनुभव होनेवाले शिक्षकोंकी संख्या ४ है। उसी प्रकार ६ से ८ वर्षका अनुभव होनेवालोंकी संख्या ५, ९ से ११ वर्ष २, १२ से १४ वर्ष ३, १५ से १७ वर्ष ७, १८ से २० वर्ष ३, २१ से २३ वर्ष २, २४ से २६ वर्ष २ और ३० से ३२ वर्ष २ इस प्रकार है।

उपर्युक्त विवेचनसे यह स्पष्ट होता है कि ४ से ५ वर्षका अध्यापन अनुभव होनेवालोंकी संख्या १३.३ प्रतिशत है, १५ से १७ वर्षका अनुभव होनेवाले अध्यापकोंकी संख्या २३.३ प्रतिशत है, तो २१ से २३, २४ से २६ और ३० से ३२ वर्षका अनुभव होनेवाले अध्यापकोंकी संख्या ६.७ प्रतिशत है।

उपर्युक्त अध्यापन अनुभव के सारणीके आधारपर हिन्दी अध्यापनका अनुभव नीचे दिए हुए सूत्रनुसार निकाल सकते हैं।

C.I.	f	x^1	fx^1	
30 - 32	2	5	10	
27 - 29	-	4	0	
24 - 26	2	3	6	
21 - 23	2	2	4	
18 - 20	3	1	3	+ 23
15 - 17	7	0	0	
12 - 14	3	-1	-3	
9 - 11	2	-2	-4	
6 - 8	5	-3	-15	
3 - 5	4	-4	-16	- 38
	N=30		- 15	

$$M = A.M. - \frac{fx^1}{N} \times i$$

$$= 16 - \frac{15}{30} \times \frac{3}{1}$$

$$= 16 - 1.5$$

$$= 14.5.$$

उपर्युक्त सूत्रद्वारा यह दिखाई देता है कि, हिन्दी अध्यापकोंका हिन्दी पढानेका अनुभव १४.५ इतना है। यह अनुभव बहुत अच्छा माना जा सकता है। अत: इन अध्यापकोंद्वारा दी गई जानकारी सही माननाही उचित होगा।

३.७ <u>हिन्दी उच्चारण-दोषोंका वर्गीकरण</u> :

हिन्दी अध्यापकोंको जो प्रश्नावली दी गई थी, उसके आठवे प्रश्नमें मराठी माध्यिक विद्यार्थी हिन्दी बोलते समय उच्चारणकी जो गलतियाँ करते हैं, उसकी सूचि अध्यापनको दी थी और सहमत होनेवाले गलतीके सामने (✓) ऐसा चिन्ह करनेके लिए कहा गया था। हिन्दी अध्यापकोंने इस प्रश्नको दिया हुआ प्रतिसाद निम्न सारणीद्वारा (सारणी क्र. ३.६) बताया गया है।

<u>सारणी क्र. ३.६</u>

हिन्दी उच्चारण दोषोंसे सहमत
शिक्षक संख्या

अ.क्र.	गलतियोंके विधान	अध्यापक संख्या	प्रतिशत
१)	अक्षरोंका गलत उच्चारण करना, ` न ` और ` ण ` में भ्रम (उदा. पाणी, राणी, स्मरन, कारन इ.)	२६	८६.७०
२)	ह्रस्व और दीर्घका गलत उच्चारण (क्योंकी, पुछना)	२८	९३.३०
३)	शब्दके पीछे ` इ ` लगाकर उच्चारण (इस्त्री, इस्कूल)	१४	४६.७०
४)	लिखित शब्दों जैसा कुछ शब्दोंका उच्चारण (बहुत, कहना, ज्ञान इ.)	२५	८३.३०
५)	ध्वन्यात्मक गलती करना (उलटा, पलटा इ.)	२०	६६.७०
६)	` श ` के स्थानपे ` ष ` का उच्चारन करना। (प्रकाष, वर्शा इ.)	१४	४६.७०

उपर्युक्त प्रतिसादका निरीक्षण करनेपर यह दिखाई देता है कि गलती क्र.१ को मिलनेवाला प्रतिसाद ९६.७ प्रतिशत है। उसी प्रकार गलती क्र.२ को मिलनेवाला प्रतिसाद ९३.३० प्रतिशत है, तो गलती क्र.४ को मिलनेवाला प्रतिसाद ८३.३० प्रतिशत, क्र. ५ को मिलनेवाला प्रतिसाद ६६.७० है और क्र. ३ और ६ को मिलनेवाला प्रतिसाद ४६.७० है।

उपर्युक्त सारणी क्र.३.६ द्वारा यह दिखाई देता है कि निम्नलिखित क्रमानुसार विद्यार्थी उच्चारण गलतियाँ करते हैं।

१) -ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घका -ह्रस्व करना।
२) ` न ` और ` ण ` के उच्चारण में गलती करना।
३) लिखित शब्दों जैसाही कुछ शब्दोंका उच्चारण करना।
४) ध्वन्यात्मक गलती करना।
५) शब्द के पीछे ` इ ` लगाने की गलती करना।
६) ` श ` के स्थानमे ` ष ` का उच्चारण करना।

इसी प्रश्नके अंतर्गत उपर्युक्त दोषोंके अतिरिक्त अगर कोई अन्य उच्चारण दोष दिखायी देते हों, तो लिखने के लिए कहा गया था। कुछ अध्यापकोंने अपने अपने अध्यापन अनुभवानुसार निम्न उच्चारण गलतियाँ निर्देशित की हैं।

१) अनेकवचन शब्दोंका उच्चारण अनुनासिक नहीं करते। (उदा. टोकरिया, गालिया)
२) मातृभाषा के समान कुछ शब्दोंका उच्चारण करते है। (उदा. हात, ओठ, हत्ती इ.)
३) संयुक्त अक्षरोंके उच्चारण ठीन तरहसे नहीं करते। (उदा. पत्नी-पन्ती)

४) उर्दू, फारसी शब्दोंके उच्चार ठीक तरहसे नहीं करते ।
(उदा. गजब, जमाना)

५) अनुनासिक अक्षरोंका उच्चारण ठीक ढंगसे नहीं करते ।
(उदा. मैं, है, नही, मे इ.)

६) अन्य बोलीभाषाके प्रभावके कारण उच्चारण दोष
(उदा. इदर-उदर, किदर, अक्बार इ.)

३.८ उच्चारण दोषोंके कारण :

विद्यार्थियोंके उच्चारण दोष देखनेके बाद इन उच्चारण दोषोंके कारण जानने के लिए प्रश्नावलीमें एक प्रश्न (प्र.क्र.९) पूछा गया था । यह प्रश्न मिश्र स्वरूपका था । उस प्रश्नके शुरूआतमें उच्चारण दोषोंके कुछ कारण दिये थे, उनमेंसे जिन कारणोंसे अध्यापक सहमत होंगे, कारणोंके आगे बराबर (✓) यह चिन्ह करनेके लिए कहा था ।

अध्यापकोंद्वारा मिलनेवाला प्रतिसाद आगे सारणी क्रमांक ३.७ में दिया गया है ।

सारणी क्र. ३.७

उच्चारण दोषोंके कारणोंसे सहमत शिक्षक संख्या

अ.क्र.	उच्चारण दोषोंके कारण	शिक्षक संख्या	प्रतिशत
१)	स्कूलके अतिरिक्त अन्यत्र हिन्दीका वातावरण नहीं ।	२५	८३.३०
२)	शुध्द तथा स्पष्ट शब्दोच्चारणके श्रवण संधीका अभाव ।	२५	८३.३०
३)	मराठी मातृभाषाके उच्चारणका परिणाम ।	३०	१००.००
४)	ग्रामीण अनौपचारिक उच्चारणोंका परिणाम ।	२६	८६.७०
५)	स्कूलमें उच्चारण सुधारकी दृष्टिसे तालिकाओंका अभाव ।	२५	८३.३०
६)	प्रकट वाचनकी अधिकाधिक संधीका अभाव ।	२०	६६.७०
७)	उच्चारण दोष सुधारनेकी दृष्टिसे व्यक्तिगत ध्यानका अभाव ।	२६	८६.७०
८)	दूरदर्शन, रेडियो, चित्रपट आदिद्वारा हिन्दी हिन्दी श्रवण अधिक, इसलिए विषय आसान और हिन्दीकी ओर दुर्लक्ष ।	२५	८३.३०
९)	कुछ विद्यार्थियोंके जिव्हादोषका उच्चारणपर परिणाम ।	२५	८३.३०
१०)			

उपर्युक्त सारणीद्वारा हमें यह दिखाई देता है कि अ.क्र. १, २, ५, ८ और ९ उच्चारण दोषोंके कारणोंसे ८३.३० प्रतिशत अध्यापक सहमत है । उसी प्रकार अ.क्र. ३ के उच्चारण दोषसे तो १०० प्रतिशत अध्यापक निर्विवाद सहमत हैं । उसी प्रकार अ.क्र. ४ और ७ से ८६.७० प्रतिशत अध्यापक सहमत है, तो अ.क्र. ६ से ६६.७० प्रतिशत अध्यापक सहमत हैं ।

इस सारणीद्वारा (सारणी क्र. ३.७) दिखाई देता है कि निम्नलिखित क्रमानुसार अध्यापक उच्चारण दोषोंसे सहमत है ।

१) मराठी मातृभाषाके प्रभावके कारण उच्चारण दोष निर्माण होते है ।
२) ग्रामीण अनौपचारिक उच्चारणके प्रभावके कारण उच्चारण दोष निर्माण होते है ।
३) उच्चारण दोष सुधारनेकी दृष्टिसे व्यक्तिगत ध्यानका अभाव ।
४) स्कूलके अतिरिक्त हिन्दीका वातावरण नहीं ।
५) शुध्द तथा स्पष्ट शब्दोच्चारणके श्रवणसंधीके अभावके कारण उच्चारण दोष निर्माण होते है ।
६) स्कूलमें उच्चारण सुधारकी दृष्टिसे तांत्रिकाओंका अभाव ।
७) दूरदर्शन, रेडियो, चित्रपट आदिद्वारा हिन्दी श्रवण अधिक, इसलिए हिन्दी आसान लगता है और उसकी ओर दूर्लक्ष कर दिया जाता है ।
८) कुछ विद्यार्थियोंके जिव्हादोषोंके कारण उच्चारण दोषोंका निर्माण ।

इसी प्रश्नके अंतर्गत उपर्युक्त कारणोंके अतिरिक्त अगर कोइ अन्य उच्चारण दोष दिखायी देते हों, तो अध्यापकोंको लिखनेके लिए कहा गया था । कुछ अध्यापकोंने अपने-अपने अध्ययन अनुभवानुसार निम्न उच्चारण दोषोंके कारण निर्देशित किये है ।

१) विद्यार्थी संख्या अधिक होनेके कारण व्यक्तिगत ध्यान नहीं दिया जा सकता ।
२) हिन्दीका प्रकट वाचन करनेकी प्रवृत्ति, शिक्षक और विद्यार्थी दोनोंकी कमी दिखाई देती है ।

३) हिन्दीकी ओर उपहासात्मक दृष्टिसे देखा जानेके कारण हिन्दीके उच्चारण जी चाहे वैसे करते हैं ।

४) शिक्षकोंके शुध्द उच्चारण का अभाव दिखाई देता है ।

५) मौखिक संभाषणको स्कूलमें कम मौका मिलता है, इसलिए हिन्दी भाषाविषयक कुछ डरसा विद्यार्थियोंके दिलमें निर्माण होता है ।

६) आजकी परीक्षा पध्दतिमें उच्चारणको जितना महत्त्व देना चाहिए, उतना नहीं दिया जाता ।

३.९ <u>उच्चारण दोषोंपर उपाययोजना</u> :

विद्यार्थियोंके उच्चारण दोष तथा उन दोषोंकी कारणमीमांसा करनेके बाद उनपर किये जानेवाले उपाययोजना जाननेके लिए प्रश्नावलीमें वैसा प्रश्न दिया गया था । इस प्रश्नके अंतर्गत ८ उपयायोजनाओंकी एक सूची दी गयी थी । उन उपाय योजनाओंसे सहमत होनेवाले शिक्षकोंकी संख्या सारणी क्रमांक ३.८ मे देखें ।

सारणी क्र. ३.८

उच्चारण दोषोंपर उपाययोजनासे सहमत शिक्षक संख्या

अ.क्र.	उपाययोजनाओंकी सूची	शिक्षक संख्या	प्रतिशत
१)	विद्यार्थियोंकी उच्चारण प्रतियोगिता लेना ।	२१	७०.००
२)	भाषण और संवाद स्पर्धा लेना ।	२७	९०.००
३)	योग्य उच्चारण के लिए ध्वनियंत्रकी चित्रों-द्वारा जानकारी देना ।	१९	६३.३०
४)	विद्यार्थियोंके व्यक्तिगत उच्चारणकी ओर ध्यान देना ।	२४	८०.००
५)	स्वराघात तथा विरामचिन्होंका उपयोग करनेके लिए विद्यार्थियोंका सतत अभ्यास लेना ।	२४	८०.००
६)	अध्यापनमें पुनरावृत्ती नियंत्रका पालन करना ।	१८	६०.००
७)	शिक्षकोंने अपना आदर्श वाचन उचित ढंगसे करनेका प्रयत्न करना ।	२६	८६.६०
८)	विद्यार्थियोंके शुध्द और अशुध्द उच्चारण टेपरिकार्डद्वारा बताना ।	२२	७३.९०
९)	दूरदर्शन, रेडिओ तथा चित्रपटद्वारा विद्यार्थियोंका हिन्दी भाषाकी श्रवणसंधी अधिकाधिक देना ।	२४	८०.००

इस सारणीद्वारा यह दिखाई देता है कि, अ.क्र. १ से उपाययोजनासे ७०.०० प्रतिशत अध्यापक सहमत हैं । उसी प्रकार क्रमांक २ से ९०.०० प्रतिशत क्रमांक ३ से ६३.३० प्रतिशत, क्रमांक ४,५ और ९ से ८०.०० प्रतिशत, क्रमांक ६ से ६०.०० प्रतिशत, क्रमांक ७ से ८६.६० प्रतिशत और क्रमांक ८ से ७३.९० प्रतिशत अध्यापक सहमत हैं ।

उपर्युक्त विवेचनसे स्पष्ट होता हैं कि निम्नलिखित क्रमानुसार अध्यापक उच्चारणदोषोंके उपाययोजनाओंसे सहमत हैं ।

१) भाषण और संवाद स्पर्धा लेना ।
२) शिक्षकोंने अपना वाचन अधिक ` आदर्श ` करनेका प्रयास करना ।
३) विद्यार्थियोंके व्यक्तिगत उच्चारणकी ओर ध्यान देना ।
४) स्वराघात तथा विरामचिन्होंका उपयोग करनेके लिए विद्यार्थियोंका सतत अभ्यास लेना ।
५) दूरदर्शन, रेडिओ तथा चित्रपटद्वारा विद्यार्थियोंको हिन्दी भाषाकी श्रवणसंधी अधिकाधिक देना ।
६) विद्यार्थियोंके शुध्द और अशुध्द ए उच्चारण टेपरिकार्डरद्वारा बताना ।
७) विद्यार्थियोंकी उच्चारण स्पर्धा लेना ।
८) योग्य उच्चारण के लिए ध्वनिर्यंत्रकी चित्रोंद्वारा जानकारी देना ।
९) अध्यापनमें पुनरावृत्ती नियमका पालन करना ।

इसी प्रश्नके अंतर्गत उपर्युक्त उपाययोजनाओंके अतिरिक्त अन्य उपाययोजना लिखनेके लिए कहा था । अध्यापकोंने अपने अपने अध्यापन अनुभवानुसार निम्न उच्चारण दोषोंपर उपाययोजनाएँ सुझायी है ।

१) साहसी तथा विनोदी आशयकी छोटी छोटी किताबे विद्यार्थियोंको पढनेके लिए देना ।

यह उपाययोजना संशोधकके मतानुसार अयोग्य है, क्योंकि विद्यार्थियोंको किताबें पढने देकर हम उच्चारण ठीक नहीं कर सकते । इसके लिए प्रत्यक्ष कक्षामेंही विद्यार्थियोंद्वारा प्रकट वाचन ले, उच्चारण ठीक करना चाहिए ।

२) हिन्दी कविता, सुविचार, व्याकरण-नियम आदि कंठस्थ करवा लेना ।

३) उत्तम हिन्दी वक्ताओंके भाषण सुनवाना ।

४) हिन्दी नाट्यस्पर्धा, स्कांकिकाका आयोजन करना ।

५) हिन्दी तासिकामें हिन्दीमे ही बातें करनेके लिए अनिवार्य करना ।

६) प्रार्थना के समय हिन्दीमें प्रतिज्ञा लेना ।

७) प्रार्थना के बाद हिन्दी सुविचार, कबीरके दोहे आदि कहनेके लिए विद्यार्थियोंको प्रवृत्त करना ।

८) उर्दू, अरबी, फारसी शब्दोंके उच्चारण शिक्षक और विद्यार्थी दोनोंको समझानेकी दृष्टिसे प्रयत्न करना आवश्यक ।

९) कुछ गद्य पाठोंका स्नेहसंमेलन के लिए नाटियकरण आयोजित करना । इससे उच्चारणभी सुधरेंगे और पाठका आशय अच्छी तरह ध्यानमें रहने मदद होगी ।

१०) विद्यार्थियोंके समुदाय कर उच्चारण स्पर्धा लेना ।

११) अच्छे फिल्मी डायलॉग कंठस्थ करवा लेना । विद्यार्थियोंपर फिल्मका तुरंत प्रभाव पडता है । आज चित्रपट प्रभावी दृकश्राव्य साधन माना जाता है । अर्थातही इस साधनका अधिकाधिक प्रयोग शिक्षाक्षेत्रमें होना चाहिए । विद्यार्थी बडे रूचिसे फिल्मके डायलॉग याद करते हैं । इससे विद्यार्थियोंके उच्चारण सुधारमें कुछ अंशतक क्यों न हो जरूर मदत होती है ।

३.१० वाचनद्वारा पाये जानेवाले दोष :

मराठी माध्यमके माध्यमिक स्कूलके विद्यार्थियोंके उच्चारण दोष ढूंढनेके लिए पाँचवी-छटी और सातवी कक्षाके पंद्रह-पंद्रह विद्यार्थियोंका वाचन टेपरिकार्डर-पर ध्वनिमुद्रित किया था । क्योंकि इससे उच्चारण त्रुटियाँ ढूँढना आसान होगा । इसलिए विद्यार्थियोंको चिठ्ठीयोंके नंबरद्वारा चुना गया था । इन विद्यार्थियोंको

` बी ` ग्रेडके स्कूलसे चुना गया था । क्योंकि सभी स्तरके विद्यार्थी इस स्कूलमें होते हैं ।

पाँचवी कक्षाके पंद्रह विद्यार्थियोंसे ` शेषचिल्ली ` यह पाठ पढवा लिया था, जो उसी कक्षाके हिन्दी पाठ्यपुस्तकके अंतर्गत है ।

छटी कक्षाके विद्यार्थियोंसे ` चालाक चौधरी ` यह पाठ पढवा लिया था, तो सातवी कक्षाके लिए ` चोर या देवता ` वह १४ वाँ पाठ पढवा लिया था ।

हर विद्यार्थिसे लगभग १५ मिनिटतक पाठ पढवा लिया गया था । टेपरिकार्डरपर वाचन ध्वनिमुद्रित करनेके बाद जो उच्चारण दोष दिखायी दिए, उनको विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है ।

सारणी क्र. ३.९

वाचनद्वारा पाये जानेवाले उच्चारण दोष

अ.क्र.	विद्यार्थियोंके उच्चारण दोष	विद्यार्थी संख्या	प्रतिशत
१)	कुछ शब्दोंका लिखित शब्दानुसार विद्यार्थी उच्चारण करते हैं । (उदा. बहुत, ज्ञान, पहला इ.)	३०	६६.७०
२)	संयुक्त शब्दोंका उच्चारण विद्यार्थी ठीक ढंगसे नहीं करते । (यातरी, अस्पताल)	४०	८८.९०
३)	ह्रस्व, दीर्घ उच्चारण गलत करते हैं । (उदा. पीछे इ.)	४२	९३.३०
४)	` न ` की जगह ` ण ` का उच्चारण करते है । (उदा. जाणे)	३०	६६.७०

सारणी क्र. ३.९ (आगे शुरू....)

अ.क्र.	विद्यार्थियोंके उच्चारण दोष	विद्यार्थी संख्या	प्रतिशत
५)	` झ ` की जगह ` ज ` का उच्चारण करते है । (समज)	३५	७७.८०
६)	` ठ ` की जगह ` ट ` का उच्चारण (उदा. बैटक)	३५	७७.८०
७)	अनुनासिक शब्दोंका ठीक ढंगसे उच्चारण नहीं करते । (उदा. बायी, मैस, चिता इ.)	४२	९३.३०
८)	` ढ ` की जगह ` ड ` का उच्चारण (उदा. बुडी)	३०	६६.७०
९)	मातृभाषाका प्रभाव हिन्दी उच्चारपर होता है । (उदा. रस्ता, नौकर इ.)	४०	८८.९०
१०)	उर्दू शब्दोंका अशुध्द उच्चारण (उदा. इजाजत)	४५	१००.००
११)	रेफ का अशुध्द उच्चारण (उदा. चरचा)	३५	७७.८०
१२)	विसर्गका उच्चारण ठीक ढंगसे नहीं करते (उदा. दुख)	३०	६६.७०
१३)	अनावश्यक वर्ण जोडकर अशुध्द उच्चारण करते है (उदा. जैस्सा)	३०	६६.७०

उपर्युक्त विवेचनसे स्पष्ट होता है कि, निम्नलिखित क्रमानुसार विद्यार्थी उच्चारण गलतियाँ करते है ।

१) उर्दू शब्दोंका अशुध्द उच्चारण करते हैं ।

२) -ह्रस्व दीर्घ उच्चारण गलत करते हैं ।

३) अनुनासिक शब्दोंका ठीक ढंगसे उच्चारण नहीं करते ।

क्रमांक २ और ३ की उच्चारण गलतियाँ करनेवाले विद्यार्थियोंकी संख्या समान है ।

४) संयुक्त शब्दोंका उच्चारण विद्यार्थी ठीक ढंगसे नही करते ।

५) मातृभाषाका प्रभाव हिन्दी उच्चारणपर होता है ।

क्रमांक ४ और ५ की उच्चारण गलतियाँ करनेवाले विद्यार्थियोंकी संख्या समान है ।

६) ` झ ` की जगह ` ज ` का उच्चारण करते हैं ।

७) रेफ का उच्चारण ठीक नही करते ।

८) ` ठ ` की जगह ` ट ` का उच्चारण करते हैं ।

क्र. ६ और ७ की उच्चारण गलतियाँ करनेवाले विद्यार्थी संख्या समान है ।

९) कुछ शब्दोंका लिखित शब्दानुसार उच्चारण करते हैं ।

१०) ` ढ ` की जगह ` ड ` का उच्चारण करते है ।

११) विसर्गका उच्चारण ठीक ढंगसे नहीं करते ।

१२) अनावश्यक वर्ण जोडकर अशुध्द उच्चारण करते है ।

१३) ` न ` की जगह ` ण ` का उच्चारण करते है ।

क्रमांक ९, १०, ११ और १३ की उच्चारण गलतियाँ करनेवाले विद्यार्थियोंकी संख्या समान है ।

मराठी माध्यमके माध्यमिक स्तरपर विद्यार्थियोंके उच्चारण दोष जाननेके लिए माध्यमिक स्कूलमें अध्यापन कार्यका अधिक अनुभव होनेवाले बारह अध्यापकोंका इण्टरव्यू लिया था (उनकी सूचि परिशिष्ट ` क ` में दी है) उने शिक्षकोंने जो उच्चारण दोष बताए, वे भी प्रश्नावलीमें दिए गए उच्चारण दोषोंकी कारणोंसे मिलते-जुलते है ।

३.११ <u>समारोप</u> :

प्रस्तुत प्रकरणमें हिन्दी अध्यापककी शैक्षणिक पात्रता, उसके विषय ५ वी से ७ वी कक्षातकके विद्यार्थियोंके उच्चारण दोष, उच्चारण दोषोंके कारण और उनपर उपाययोजना आदिके बारेमें विवेचन किया गया है।

विद्यार्थियोंके उच्चारण और लेखन दोषके कारण ढूँढना और उसपर उपाययोजना करना, यह प्रस्तुत प्रकल्पका विषय होनेके कारण विद्यार्थियोंके लेखनदोष, उसके कारण आदिके बारेमें चर्चा अगले प्रकरणमें की गई है।

" हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके
बल पर वह विश्व वर्ग साहित्यिक भाषाओं
की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है। "

- राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त